DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

18 April, 2024

लॉन्ग कोविड

संदर्भ: *विश्व स्वास्थ्य संगठन बिना किसी अन्य कारण के तीन महीने से अधिक समय तक बने रहने वाले कोविड लक्षणों के लिए "लॉन्ग कोविड" का उपयोग करता है।*

➢ **लॉन्ग कोविड के निर्धारण में चुनौतियां:**

- कोविड-19 के कारण पुरानी बीमारी और दिव्यान्गता जांच और उसके नियंत्रण में कठिनाई।
- इस सन्दर्भ में मृत्यु और आईसीयू में भर्ती होने जैसे द्विआधारी परिणामों को आसानी से गिना जाता है, लेकिन धीमी गति से शुरू होने वाले स्वास्थ्य मुद्दों का पता लगाना कठिन होता है।
- SARS-CoV-2 संक्रमण के बिना भी नई स्वास्थ्य समस्याएं जन्म ले सकती हैं।
- विभिन्न पद्धतियों का उपयोग करने वाले अध्ययन विभिन्न लॉन्ग कोविड घटनाओं की दर की रिपोर्ट करते हैं।

➢ **अध्ययन विधि:**

- लॉन्ग कोविड संबंधी अध्ययन हेतु संयुक्त राज्य अमेरिका में 2,38, 828 व्यक्तियों से प्राप्त रक्त डेटा का उपयोग किया गया।
- पिछले कोविड - 19 संक्रमण वाले व्यक्तियों की पहचान करने के लिए पूर्व-ओमीक्रोन संक्रमण युग (pre-Omicron era) की लीवरेज एंटीबॉडी परीक्षण परिणाम का प्रयोग किया गया था।
- एंटी-न्यूक्लियोकैप्सिड (anti-N) एंटीबॉडी के साथ पहचाने गए व्यक्ति, टीकाकरण से प्राकृतिक संक्रमण को अलग करते हैं।
- अध्ययन हेतु संक्रमित व्यक्तियों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया; एक तो वे जिनके पास एंटी-एन एंटीबॉडी हैं या या उनकी पुष्टि की जा चुकी है तथा दूसरे वे जो COVID-19 उपचार के साथ हैं या उसके अभाव में हैं।

➢ **मुख्य निष्कर्ष:**

- अब तक पुष्टि किए गए SARS-CoV-2 संक्रमण वाले 43.3% व्यक्तियों ने चार सप्ताह या उससे अधिक समय तक चलने वाले नए लक्षणों का अनुभव किया।
- बिना संक्रमण वाले लोगों में से, 22.1% में नए-शुरुआती लक्षणों का पता चला।
- 21.2% को वास्तव में SARS-CoV-2 संक्रमण के परिणामस्वरूप होने वाली दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएं थीं।
- इस सन्दर्भ में न्यूरोलॉजिकल लक्षण (23.6%) और स्वाद या गंध में बदलाव (23.1%) सामान्य दीर्घकालिक लक्षण थे।
- प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पूर्व संक्रमण (11.9%) वाले लोगों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं बिना संक्रमण (9.8%) वाले लोगों की तुलना में थोड़ी अधिक हैं।

➢ **मानसिक कल्याण पर प्रभाव:**

- यह महामारी पूरी आबादी के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है, न कि केवल उन लोगों पर जिन्हें कोविड हुआ है।
- इसके लिए अकेलापन, भय, शोक और वित्तीय चिंताएँ मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान करती हैं।

➢ **लंबे समय तक कोविड का का बने रहना:**

- एक वर्ष से अधिक समय तक कोविड रहने वाले लक्षण सामान्य हैं, लेकिन लंबे समय तक रहने वाला कोविड ठीक हो जाता है।
- घरेलू सर्वेक्षण से पता चलता है, कि पूर्व कोविड -19 वाले लगभग 10% वयस्क अभी भी लॉन्ग कोविड से प्रभावित हैं।
- इस प्रकार बार-बार संक्रमण से लॉन्ग कोविड का खतरा बढ़ता जा रहा है।

➢ **लॉन्ग कोविड में परिवर्तन:**

- पिछले वेरिएंट की तुलना में ओमिक्रॉन संक्रमण के बाद लॉन्ग कोविड का होना सामान्य बात है।
- बार-बार के संक्रमण से लॉन्ग कोविड का खतरा बढ़ता जाता है।

हीट एक्शन प्लान (HAP)

संदर्भ: *भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने पूर्वी और दक्षिणी भारत में आने वाले दिनों में, अधिकतम तापमान में वृद्धि और लू की स्थिति. दोनों की भविष्यवाणी की है।*

➢ **हीटवेव की परिभाषा:**

- आईएमडी के अनुसार, हीटवेव की परिभाषा क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति के आधार पर भिन्न-भिन्न होती है।
- आईएमडी द्वारा आधिकारिक तौर पर हीटवेव की घोषणा तब की जाती है जब किसी भौगोलिक क्षेत्र पर दर्ज किया गया अधिकतम तापमान एक निश्चित और निर्धारित सीमा तक पहुंच जाता है:
  - मैदानी इलाकों में 40 डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक।
  - तटीय क्षेत्रों में 37 डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक।
  - पहाड़ी इलाकों में 30 डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक।
- हीटवेव की गंभीरता उसके सामान्य तापमान से अलग होने या दर्ज किए गए वास्तविक अधिकतम तापमान से निर्धारित होती है।

➢ **हीटवेव के प्रभाव से बचना:**

- हीटवेव की बढ़ती गंभीरता और आवृत्ति के प्रभाव से बचने के लिए, विभिन्न स्तरों (राज्य, जिला और शहर) पर सम्बंधित सरकारों ने हीट एक्शन प्लान (HAP) विकसित किए हैं।
- इन योजनाओं का उद्देश्य हीटवेव से बचने की तैयारियों को बढ़ाना और रोकथाम के लिए उपाय करना है। साथ ही सम्बंधित प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति के लिए रणनीतियों एवं उपायों की रूपरेखा तैयार करके अत्यधिक गर्मी के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना है।
- इस प्रयास में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और आईएमडी के बीच के सहयोगात्मक प्रयास महत्वपूर्ण है।
- वर्तमान में, राज्य और शहर दोनों स्तरों पर कम से कम 23 HAP हैं, जो प्रत्येक भेद्यता मूल्यांकन और प्रतिक्रिया योजना पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

➢ **HAPs में सिफ़ारिशें:**

- एचएपी सामान्यतः उन सभी उपायों के संयोजन की सिफारिश करते हैं, जिनमें शामिल हैं:
  - जनता और संबंधित अधिकारियों को सचेत करने के लिए पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों का उपयोग करना।
  - लू के खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सार्वजनिक शिक्षा अभियान चलाना।
  - अत्यधिक गर्मी की घटनाओं के दौरान राहत प्रदान करने के लिए हीट शेल्टर और शीतलन केंद्र स्थापित करना।
  - निर्जलीकरण को रोकने के लिए स्वच्छ पेयजल तक पहुंच सुनिश्चित करना।
  - गर्मी से संबंधित बीमारियों से निपटने के लिए अस्पतालों को आवश्यक आपूर्ति और प्रशिक्षित कर्मचारियों से सुसज्जित करना।
- इसके अलावा एचएपी में सुझाई गई दीर्घकालिक रणनीतियों में वृक्षारोपण और ठंडी छत प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन जैसी शहरी नियोजन पहल भी शामिल हैं।

➢ **हीटवेव से बचने में आने वाली चुनौतियाँ:**

- हीटवेव की प्राथमिक चुनौतियों में से एक स्थानीय स्तर पर अलग-अलग हीटवेव थ्रेसहोल्ड की कमी है।
- भेद्यता मूल्यांकन में प्रयुक्त असंगत तरीके भी एचएपी की प्रभावशीलता में बाधा डालते हैं।
- इस सन्दर्भ में ऐसे लक्षित हस्तक्षेपों की आवश्यकता है जो कमजोर आबादी की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।
- अतः इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एचएपी के लिए समर्पित बजट सहित संसाधनों का पर्याप्त आवंटन आवश्यक है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

- साथ ही व्यापक हीटवेव शमन के लिए व्यापक शहरी लचीलेपन और जलवायु अनुकूलन योजनाओं के साथ एचएपी का एकीकरण आवश्यक है।
- इस प्रकार हीटवेव से उत्पन्न चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए प्रकृति-आधारित समाधानों पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है।

प्राथमिक प्लास्टिक पॉलिमर

संदर्भ: *प्लास्टिक प्रदूषण की समस्या से निजात पाने के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (UNEA) में चल रही बातचीत में, "प्राथमिक प्लास्टिक पॉलिमर" शब्द का उल्लेख किया गया है।*

- प्राथमिक प्लास्टिक पॉलिमर ऐसे ठोस पदार्थ होते हैं जिनमें एक या अधिक उच्च-आणविक-द्रव्यमान वाले पॉलिमर होते हैं, जो गर्मी और/या दबाव का उपयोग करके विनिर्माण या निर्माण के दौरान अपने आकार के आवश्यक घटक बनाने हेतु जिम्मेदार हैं।
- वे आमतौर पर दैनिक जीवन में उपयोग की जाने वाली अधिकांश प्लास्टिक वस्तुओं के मूलभूत निर्माण खंडों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- प्राथमिक प्लास्टिक पॉलिमर, प्लास्टिक प्रदूषण के मूल कारणों को लक्षित करते हैं। अतः इन वार्ताओं का उद्देश्य विशिष्ट प्रकार के प्लास्टिक को संबोधित करना है जो पर्यावरणीय गिरावट और समुद्री कूड़े की वृद्धि में योगदान देते हैं।
- नीति निर्माता और हितधारक प्लास्टिक उत्पादन और खपत में लक्षित उपायों को लागू करने के लिए प्राथमिक पॉलिमर की पहचान और विनियमन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

Plastics in use in 2019, by polymer and application

Sr. no.	Polymer type	Million metric tonnes	Percentage
1	Linear low-density polyethylene (LLDPE) and low-density polyethylene (LDPE)	54	12
2	High-density polyethylene (HDPE)	56	12
3	Polypropylene (PP)	73	16
4	Polystyrene (PS)	21	5
5	Polyvinyl chloride (PVC)	51	11
6	Polyethylene terephthalate (PET)	25	5
7	Others (including applications like marine coatings, road markings and fibres)	179.5	39
	Total	459.5	

Source: OECD 2022. *Global Plastics Outlook: Economic Drivers, Environmental Impacts and Policy Options*, OECD Publishing, Paris

➤ पॉलिमर:

- 'पॉलिमर' (बहुलक) शब्द की उत्पत्ति दो ग्रीक शब्दों 'पॉली' अर्थात् अनेक और 'मर' अर्थात् इकाई अथवा भाग से हुई है। बहुलकों के बहुत बृहत् अणु की तरह परिभाषित किया जा सकता है जिनका द्रव्यमान अतिउच्च (10'-10'u) होता है। इन्हें बृहदणु भी कहा जाता है।
- पॉलिमर चार मुख्य उद्योगों; जैसे-प्लास्टिक, प्रत्यास्थ बहुलकों, रेशों और प्रलेपों (पेंट्स) व वार्निशों के लिए मुख्य आधार हैं।
- 'पॉलिमरों' का उपयोग प्लास्टिक की बाल्टियों, कपों, तश्तरियों, बच्चों के खिलौनों, पैकेज में प्रयुक्त होने वाले थैलों, संश्लेषित (सिंथेटिक) वस्त्र सामग्रियों, स्वचालित वाहनों के टायरों, गियरों और सीलों, विद्युतरोधी पदार्थों और मशीन के कलपुर्जा के औद्योगिक निर्माण में किया जाता है।

GLOBAL PLASTIC TREATY NEGOTIATIONS

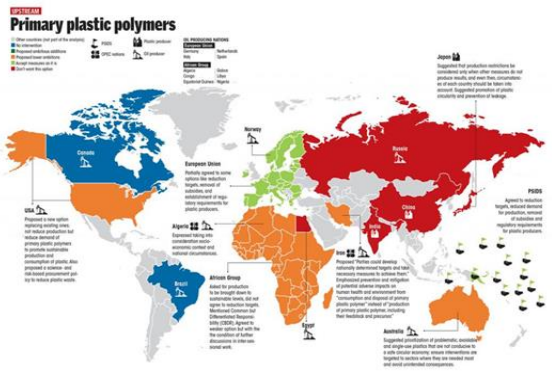

NEWS IN BETWEEN THE LINES

व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन

UNITED NATIONS UNCTAD

हाल ही में, व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD) ने बताया कि भारत ने 2023 में 6.7% की वृद्धि दर्ज की और 2024 में 6.5% तक विकास दर होने का अनुमान है, जिससे दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति बने रहेगी।

व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के बारे में:

- व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD) संयुक्त राष्ट्र सचिवालय के भीतर एक स्थायी अंतरसरकारी निकाय है।
- विश्व व्यापार में विकासशील देशों के हितों को बढ़ावा देने के लिए 1964 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा इसकी स्थापना की गई थी।
- इसका उद्देश्य विकासशील देशों को वैश्विक अर्थव्यवस्था में न्यायसंगत एकीकरण में सहायता करना, उनके विकास के अवसरों, निवेश और व्यापार को अधिकतम करना, विकास के लिए वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देना, वैश्विक आर्थिक नीति निर्माण में सुसंगतता को बढ़ाना और यह सुनिश्चित करना है कि विकास लाभ के संदर्भ में व्यापार से सभी को लाभ हो।
- अंकटाड द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट, जिसमें व्यापार और विकास रिपोर्ट, विश्व निवेश रिपोर्ट, सबसे कम विकसित देशों की रिपोर्ट, सूचना और अर्थव्यवस्था रिपोर्ट, प्रौद्योगिकी और नवाचार रिपोर्ट एवं कमोडिटीज और विकास रिपोर्ट शामिल हैं।
- इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है।

भारतीय एथलेटिक्स महासंघ

हाल ही में, यह घोषणा की गई कि 27वीं राष्ट्रीय महासंघ कप एथलेटिक्स चैंपियनशिप भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम में 12 से 15 मई तक आयोजित की जाएगी और इसका आयोजन भारतीय एथलेटिक्स महासंघ के तत्वावधान में ओडिशा एथलेटिक्स एसोसिएशन के साथ ओडिशा सरकार द्वारा किया जाएगा।

भारतीय एथलेटिक्स महासंघ के बारे में:

- भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) भारत में एथलेटिक्स के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करता है और इसकी स्थापना 1946 में हुई थी।
- यह विश्व एथलेटिक्स, एशियाई एथलेटिक्स एसोसिएशन (एएए) और भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय निकायों से संबद्ध है।
- 32 संबद्ध राज्य इकाइयों और संस्थागत इकाइयों को शामिल करते हुए, एएफआई राष्ट्रीय चैंपियनशिप के संगठन और ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप जैसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए भारतीय टीमों के चयन और प्रशिक्षण की देखरेख करता है।
- अपने नियामक कार्यों के अलावा, एएफआई अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से एथलेटिक्स को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है, जिसका लक्ष्य खेल को लोकप्रिय बनाना और इसके विकास को बढ़ावा देना है।
- यह भारत भर में कोचिंग शिविरों, कोच प्रशिक्षण कार्यक्रमों और विकासात्मक परियोजनाओं जैसी पहलों के माध्यम से जमीनी स्तर के विकास का समर्थन करता है।
- भारतीय एथलेटिक्स की एक समृद्ध विरासत है, जिसने एशियाई खेलों में भारत के पदक जीतने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और मिल्का सिंह, पीटी उषा और अंजू बॉबी जॉर्ज जैसे प्रसिद्ध एथलीट तैयार किए हैं।
- यह देश भर में युवा प्रतिभाओं की पहचान करने और उनका पोषण करने के लिए राष्ट्रीय अंतर-जिला जूनियर एथलेटिक्स मीट (एनआईडी-जेएएम) और आईएएएफ-एएफआई किड्स एथलेटिक्स जैसे कार्यक्रम आयोजित करता है।

लीफ लिटर मेंढक

शोधकर्ताओं ने हाल ही में पाया है कि ब्राजील के अटलांटिक वर्षावन में पाए जाने वाले एक छोटे मेंढक की प्रजाति रक्षा तंत्र के रूप में पराध्वनिक ध्वनि उत्सर्जित करती है।

लीफ लिटर मेंढक के बारे में:

- लीफ लिटर फ्रॉग को वैज्ञानिक रूप से हेडडस बिनोटाटस के नाम से जाना जाता है और यह ब्राज़ीलियाई अटलांटिक वर्षावन के लिए स्थानिक है।
- मेंढक की यह प्रजाति असाधारण रूप से छोटी है, इसका आकार एक इंच से भी छोटा है, जो इसे विश्व स्तर पर सबसे छोटी मेंढक प्रजातियों में से एक के रूप में जाना जाता है।
- यह शिकारियों से सामना होने पर अल्ट्रासोनिक ध्वनि उत्पन्न करके एक दिलचस्प रक्षा तंत्र का उपयोग करता है, अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को ऊपर उठाना, अपना मुंह चौड़ा करना और अपना सिर पीछे फेंकना जैसे अद्वितीय रक्षात्मक व्यवहार प्रदर्शित करता है, जिसका उद्देश्य संभावित खतरों को रोकना है।
- विशेष रूप से, लीफ लिटर फ्रॉग द्वारा उत्सर्जित अल्ट्रासोनिक ध्वनि मनुष्यों के लिए श्रव्य सीमा से परे हैं (20 kHZ से 44 kHZ तक)।
- इंस्टीट्यूट ऑफ बायोलॉजी, साओ पाउलो और प्रोजेक्ट डैकनिस प्रिजर्व के ब्राजीलियाई वैज्ञानिकों ने इस मेंढक प्रजाति पर अध्ययन किया, जिसमें वर्षावन के वातावरण में इसकी अल्ट्रासोनिक ध्वनि रिकॉर्ड की गई।
- अल्ट्रासोनिक ध्वनि का प्राथमिक उद्देश्य या तो शिकारियों को रोकना या सुरक्षा के लिए अन्य जानवरों को आकर्षित करना माना जाता है, जो ऐसे प्रतीत होने वाले छोटे जीवों द्वारा निभाई जाने वाली जटिल पारिस्थितिक भूमिकाओं को रेखांकित करता है।

बी वायरस

हाल ही में, हांगकांग में एक जंगली बंदर से बी वायरस से संक्रमित 37 वर्षीय व्यक्ति गंभीर स्थिति में है, ज्यादातर मामलों में प्रयोगशाला कर्मचारी शामिल होते हैं जो बंदी जानवरों या बंदर के ऊतकों को संभालते हैं।

बी वायरस के बारे में:

- बी वायरस, जिसे हर्पीस वायरस बी के नाम से भी जाना जाता है, पहली बार 1932 में पहचाना गया था जब एक युवा डॉक्टर डॉ. विलियम ब्रेबनर को पोलियो वायरस पर शोध करते समय एक मकाक बंदर ने काट लिया था।
- यह वायरस मुख्य रूप से काटने, खरोंचने या संक्रमित बंदरों, विशेषकर मकाक के शारीरिक तरल पदार्थ के संपर्क से मनुष्यों को संक्रमित करता है।
- दुनिया भर में बी वायरस संक्रमण के मामले दर्ज किए गए हैं, अमेरिकी रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र ने इसकी खोज के बाद से 50 मामले दर्ज किए हैं।
- बी वायरस संक्रमण गंभीर न्यूरोलॉजिकल बीमारी और श्वसन विफलता का कारण बन सकता है, अगर इलाज न किया जाए तो इसमें मृत्यु दर 70% तक हो सकती है।
- बी वायरस संक्रमण के लिए एंटीवायरल दवाओं के साथ शीघ्र उपचार महत्वपूर्ण है, क्योंकि वायरस के खिलाफ कोई टीका उपलब्ध नहीं है।

सुर्खियों में स्थल

अराल सागर

लीबनिज इंस्टीट्यूट फॉर ट्रोपोस्फेरिक रिसर्च (TROPOS) और फ्री यूनिवर्सिटेट बर्लिन के एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि अरल सागर के सूखने से पिछले तीन दशकों में मध्य एशिया में धूल की मात्रा 7% बढ़ गई है।

अरल सागर के बारे में:

- अरल सागर उत्तर में कजाकिस्तान और दक्षिण में उज्बेकिस्तान के बीच की सीमा पर स्थित है जो कैस्पियन सागर के पूर्व में मध्य एशिया के मध्य में स्थित है।
- अरल सागर, जो कभी दुनिया के चौथे सबसे बड़े अंतर्देशीय जल निकाय के रूप में जाना जाता था। इसका मध्य एशिया में खारे पानी की झील के रूप में महत्वपूर्ण स्थान था।
- यह सोवियत मध्य एशिया में स्थित है और इसे पामीर और टीएन शान पर्वत श्रृंखलाओं से निकलने वाली अमु दरिया और सीर दरिया नदियों से पानी मिलता था।
- 1960 के दशक में शुरू हुई, व्यापक सोवियत सिंचाई परियोजनाओं ने इन नदियों के पानी को कृषि के लिए मोड़ दिया, जिसके परिणामस्वरूप अरल सागर में पानी का प्रवाह कम हो गया।
- पानी का प्रवाह कम होने से झील के आकार मे तीव्र कमी आई, जिससे गंभीर पर्यावरणीय गिरावट हुई और अरलकुम रेगिस्तान का उदय हुआ।
- अरल सागर के सूखने से लवणता का स्तर बढ़ गया है, जैव विविधता कम हो गई है और स्थानीय जलवायु और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- अरल सागर बेसिन के पर्यावरणीय क्षरण से अंतर्राष्ट्रीय चिंताएं उत्पन्न हुई जिससे जल प्रबंधन चुनौतियों का समाधान करने और स्थानीय समुदायों और पारिस्थितिक तंत्र पर मरुस्थलीकरण के प्रभावों को कम करने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों को बढ़ावा मिला है।

POINTS TO PONDER

- वैश्विक आर्थिक और वित्तीय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हुए ब्रेटन वुड्स कमेटी (बीडब्ल्यूसी) संगठन की स्थापना कब की गई थी? – **1983**
- हाल ही में पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से 5,200 साल पुरानी हड़प्पा बस्ती कहाँ खोजी गई थी? – **कच्छ, गुजरात**
- शोधकर्ताओं ने समुद्री शैवाल ब्रारुडोस्फेरा बिगेलोवी में नाइट्रोजन स्थिरीकरण के संबंध में कौन सी महत्वपूर्ण खोज की? – **उन्होंने एक प्रकार के ऑर्गेनेल, नाइट्रोप्लास्ट की खोज की, जो नाइट्रोजन को स्थिर करने में सक्षम है।**
- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड्स (SGrBs) के संबंध में हाल ही में क्या निर्णय लिया? – **विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) को एसजीआरबी में निवेश की अनुमति देना**
- भारत, मालदीव और श्रीलंका की सीमा वाले जल निकाय का क्या नाम है? – **लक्कादीव सागर**